श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
मनित विश्वविद्यालय
कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली–110016

संख्या : ला.ब.शा./आई.क्यू.ए.सी/2014/ दिनांक : 23/12/2014

कार्यवृत्त

आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (आई.क्यू.ए.सी) के पुनर्गठन के अनन्तर प्रकोष्ठ से सम्बद्ध सदस्यों का एक उपवेशन दिनांक 23/12/2014 को अपराह्ण 02.00 बजे प्रो. प्रेम कुमार शर्मा की अध्यक्षता में कुलपति कार्यालय के समिति कक्ष में समायोजित हुआ। उपवेशन में अधोनिर्दिष्ट सदस्य उपस्थित हुए तथा अध्ययन अध्यापन की गुणवत्ता की दृष्टि से सम्पन्न महत्त्वपूर्ण विचार विमर्श में भाग लिया। प्रो. भास्कर मिश्र बी.एड. के शैक्षणिक कार्यक्रम में आवश्यक रूप से व्यस्त होने के कारण उपवेशन में उपस्थित नहीं हो सके तथा डॉ. संजीत कुमार झा भी किन्हीं कारणों से अनुपस्थित रहे।

क्र.	सदस्य	मोबाइल	पद
1.	प्रो. प्रेम कुमार शर्मा, सङ्काय प्रमुख, वेद–वेदाङ्ग श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ	9868087799	अध्यक्ष
2.	प्रो. भास्कर मिश्र सङ्काय प्रमुख, आधुनिक ज्ञान विज्ञान श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ	9911366108	सदस्य
3.	प्रो. कमला भारद्वाज सङ्काय प्रमुख, छात्र कल्याण श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ	9810967067	सदस्य
4.	प्रो. एस.एन. रमामणि प्रोफेसर, अद्वैतवेदान्त विभाग श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ	9868805039	सदस्य
5.	प्रो. शुद्धानन्द पाठक प्रोफेसर, अद्वैतवेदान्त विभाग श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ	9650740046	सदस्य
6.	प्रो. इच्छाराम द्विवेदी सङ्काय प्रमुख, साहित्य एवं संस्कृति श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ	9911856763	सदस्य
7.	प्रो. वीर सागर जैन सङ्काय प्रमुख, दर्शन श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ	9868888607	सदस्य

8.	प्रो. सुमन कुमार झा सहायक प्रोफेसर, साहित्य विभाग श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ	9868085785	सदस्य
9.	डॉ. कान्ता सहायक कुलसचिव, प्रशासन श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ	9868115576	सदस्य
10.	डॉ. ओम् प्रकाश पाण्डेय 143/9, किशन गढ़, गौशाला रोड़, वसन्त कुंज, दिल्ली–110070	9810621060	बाह्य सदस्य
11.	डॉ. गिरीश नाथ झा एसोसिएट प्रोफेसर, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली–110067	9899107988	बाह्य सदस्य
12.	डॉ. संजीत कुमार झा सी/ओ श्री रमेश्वर ठाकुर, नई कॉलोनी, शुभानकर पुर, महाराजीपुल के पास, दरभंगा, बिहार–846004	9999227065	बाह्य सदस्य
13.	प्रो. पीयूषकान्त दीक्षित निदेशक, आई.क्यू.ए.सी	9810061951	सदस्य सचिव

आई.क्यू.ए.सी निदेशक द्वारा उपवेशन में मङ्गलाचरण के अनन्तर उपस्थित सभी आन्तरिक आई.क्यू.ए.सी सदस्यों का स्वागत किया गया।

आई.क्यू.ए.सी निदेशक प्रो. पीयूषकान्त दीक्षित ने सभी आई.क्यू.ए.सी सदस्यों को आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ की आवश्यकता तथा इसके द्वारा सम्पन्न हो रहे कार्यों के विषय में सूचना दी तथा इसके माध्यम से कैसे विद्यापीठ में पठन–पाठन एवं प्रशासन की गुणवत्ता को बढ़ाया जाए इस विषय में चर्चा की। इस सन्दर्भ में निदेशक ने सदस्यों को बताया कि छात्रों अध्यापकों, कर्मचारियों, पूर्व छात्रों एवं कर्मचारियों से विद्यापीठ के सम्बन्ध में नियमित प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिये विद्यापीठ आई.क्यू.ए.सी द्वारा विभिन्न प्रतिक्रिया–प्रपत्रों का निर्माण अंग्रेजी में किया गया है तथा अध्यापकों एवं छात्रों की माँग को देखते हुए इन प्रपत्रों को हिन्दी में भी तैयार कर विद्यापीठ की वेबसाइट पर अपलोड कर दिया गया है। ऑन–लाईन प्रतिक्रिया प्राप्त करने की भी व्यवस्था उपलब्ध करवाई गई है। विद्यापीठ की वेबसाइट पर सम्बद्ध सदस्यों से प्रतिक्रिया प्राप्त करने के उद्देश्य से तथा सूचनाओं का सहजता से आदान प्रदान करने की दृष्टि से फेस–बुक का एकाउण्ट भी खोला गया है।

इस सन्दर्भ में आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ द्वारा एकदिवसीय राष्ट्रिय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 12/03/2014 को समय 10:00 बजे सारस्वत साधना सदन के ''वाचस्पति सभागार'' में किया गया। इस कार्यशाला में प्रथम विषय ''**पारम्परिक शास्त्रों के अध्ययन में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का उपयोग**'' पर प्रो. गिरीश नाथ झा,

(एसोसिएट प्रोफेसर, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली) ने व्याख्यान दिया। व्याख्यान में उन्होंने संस्कृत भाषा का उपयोग अधिक से अधिक इंटरनेट पर करने को कहा साथ ही कई ऐसे वेबसाइट के बारे में बताया जिनके द्वारा हम संस्कृत भाषा के उद्‌गम के विषय में पर्याप्त ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

द्वितीय विषय **''छात्र प्रतिक्रिया प्रपत्र : अध्यापन दक्षता के मूल्याङ्कन के सन्दर्भ में''** पर प्रो. एस.एस. राणा जी, (भूतपूर्व, डीन ऑफ कॉलेजेज, दिल्ली विश्वविद्यालय) ने व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में उन्होंने अध्यापन दक्षता की दृष्टि से प्रतिक्रिया प्रपत्र के उपयोग के बारे में बताया। समस्त संकाय प्रमुखों, विभागाध्यक्षों एवं छात्रों ने इस कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लेकर, कार्यशाला को सफल बनाया तथा इस प्रकार के गुणवत्ता की दृष्टि से ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों को नियमित रूप से आयोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया। यह व्याख्यान सभी विद्यापीठ सदस्यों के लिये अत्यन्त उपादेय सिद्ध हुआ।

आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ द्वारा विद्यापीठ के छात्रों, अध्यापकों तथा कर्मचारियों को जागरूक करने की दृष्टि से दिनांक 11/03/2014, 18/03/2014, 19/03/2014, 08/04/2014 एवं 09/04/2014 को विद्यापीठ के समस्त छात्रों, अध्यापकों तथा कर्मचारियों के लिए विषयबोध कार्यक्रम (Orientation Program) कम्प्यूटर लैब में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में विद्यापीठ की वेबसाइट पर उपलब्ध प्रतिक्रिया प्रपत्र (Feedback form) भरने से सम्बद्ध प्रक्रिया के बारे में विस्तार से बताया गया।

आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (आई.क्यू.ए.सी) के निदेशक की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा ए.पी.ए.आर के लिये ''**ए.पी.आई तथा सी.ए.एस**'' आवेदन पत्र को, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार, पुनः परिष्कृत कर, वर्ष 2014 से उपयोग हेतु नए आवेदन पत्र का निर्माण किया गया है, जो अवलोकनार्थ प्रस्तुत है। ''**ए.पी.आई तथा सी.ए.एस**'' आवेदन पत्र स्वीकृत्यर्थ प्रबन्ध–मण्डल के उपवेशन में भेजा जाना है।

विद्यापीठ के मूल्याङ्कन हेतु नैक द्वारा प्रत्यायन से सम्बद्ध कार्य त्वरित गति से चल रहा है। इस सन्दर्भ में स्वाध्ययन प्रतिवेदन (Self Study Report) विद्यापीठ के वेबसाइट पर अपलोड कर दिया गया है तथा नैक के नियमानुसार इसकी 12 प्रतियाँ बना कर नैक कार्यालय को प्रेषित भी की जा चुकी हैं।

प्रो. दीक्षित ने आई.क्यू.ए.सी द्वारा तैयार, पूर्व आई.क्यू.ए.सी के सदस्यों द्वारा अनुमोदित एवं नैक को प्रेषित ए.क्यू.ए.आर 2013–14 नवगठित प्रकोष्ठ के सदस्यों के अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया, जिसका सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से पुष्टि एवं अनुमोदन किया। प्रो. दीक्षित ने यह भी बताया कि ए.क्यू.ए.आर 2014–15 का निमार्ण कार्य त्वरित गति से चल रहा है जिस पर सभी सदस्यों ने सन्तोष व्यक्त किया। आई.क्यू.ए.सी के लिये

सारस्वत साधना सदन के तृतीय तल पर कक्ष संख्या 308 प्राप्त हुआ है, जहाँ से इस प्रकोष्ठ की गतिविधियाँ संचालित हो रही हैं, यह जानकर भी सदस्यों ने प्रसन्नता व्यक्त की तथा प्रकोष्ठ के निदेशक के लिए लैपटॉप छात्रों को समय–समय पर गुणवत्ता की दृष्टि से आई.क्यू.ए.सी द्वारा प्रशिक्षित करने के लिए एक आधुनिक प्रशिक्षण से सम्बद्ध सभी सुविधाओं से युक्त अतिरिक्त कक्ष वर्तमान कार्यालयीय कक्ष के साथ ही उपलब्ध करवाने की अनुशंसा भी की। कार्यालय में नियमित दो एल.डी.सी एवं एक एम.टी.एस को उपलब्ध करवाने की अनुशंसा भी सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति से की गई, जिससे गुणवत्ता की अभिवृद्धि की दिशा में प्रकोष्ठ और तीव्र गति से कार्य कर सके।

चर्चा के प्रसङ्ग में एन.सी.सी [मानव संसाधन विकास मन्त्रालय द्वारा प्राप्त पत्र संख्या 63–6/2014-DESK U(PT.1) दिनांक 04.09.2014] एवं पर्यावरण विषय [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्राप्त पत्र संख्या DO NO. F.13/-1/2000(EA)ENV/COS-1 दिनांक 07.08.2014] को यथाक्रम इलेक्टिव एवं अनिवार्य विषय के रूप में अग्रिम सत्र से शास्त्री स्तर पर पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के विषय में गुणवत्ता की दृष्टि से चर्चा की गई तथा मानव संसाधन विकास मन्त्रालय एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा लिखित निर्देश का सर्वसम्मति से सदस्यों ने अनुमोदन किया साथ ही पाठ्यक्रम निर्माण के लिये विद्यापीठ द्वारा गठित समिति से आग्रह किया कि यह पाठ्यक्रम यथा–शीघ्र तैयार कर विद्यापीठ प्रशासन को विद्वत् परिषद् एवं प्रबन्धन–मण्डल से पारित करवाने हेतु प्रस्तुत करें। सदस्यों ने गठित समिति से पाठ्यक्रम निर्माण करते समय यह ध्यान देने के लिए कहा कि पाठ्यक्रम का निर्माण संस्कृत में किया जाए तथा भारतीय शास्त्रों में शस्त्र एवं पर्यावरण शिक्षा से सम्बद्ध उन अंशों का समावेश अवश्य करें जिससे इस क्षेत्र में हमारी विशेषज्ञता सिद्ध होती हो।

सदस्यों ने लेफ्टिनेण्ट जनरल द्वारा प्रधानमंत्री को लिखे पत्र के साथ प्रस्तुत एन.सी.सी के पाठ्यक्रम को सर्वसम्मति से अपने यहाँ पाठ्यक्रम में समाविष्ट करने के लिए भी आग्रह किया। पर्यावरण से सम्बद्ध पाठ्यक्रम गठित समिति ने तैयार कर लिया है तथा अग्रिम उपवेशन में इसे अन्तिम रूप दे कर विद्वत्–परिषद् की स्वीकृति के लिये भेज दिया जायेगा। यह प्रकोष्ठ की सदस्या प्रो. कमला भारद्वाज ने सदस्यों को बताया। डॉ. ओम प्रकाश पाण्डेय ने पर्यावरण से सम्बद्ध पाठ्यक्रम में मानसिक पर्यावरण को भी स्थान देने का आग्रह किया तथा इस सम्बद्ध में आवश्यकता के अनुसार सामग्री उपलब्ध करवाने का आश्वासन भी दिया। प्रो. गिरीशनाथ झा ने अतिथि आचार्य के रूप में अन्य विश्वविद्यालयों से आचार्यों को विद्यापीठ में के माध्यम से आमन्त्रित करने का भी सुझाव अध्ययन में विविधता एवं गुणवत्ता की अभिवृद्धि की दृष्टि से दिया, इन सुझाओं का सभी सदस्यों ने एकमत से समर्थन किया।

उपवेशन में अन्य विषयों पर अध्यक्ष की अनुमति से चर्चा के क्रम में डॉ. सुमन कुमार झा द्वारा प्रस्तुत **'विकल्प आधारित क्रेडिट प्रणाली'** (च्वाइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम) के

अन्तर्गत वैकल्पिक विषयों के अध्ययन–अध्यापन के सन्दर्भ में समस्त विभागों में समान नीति के अनुसरण को सुनिश्चित करने के लिये एक निरीक्षण समिति के गठन के प्रस्ताव का सदस्यों ने एक मत से समर्थन किया। इनका सुझाव था कि यदि यह कार्य विभाग स्तर पर सम्भव न हो तो सङ्काय स्तर पर भी इसे क्रियान्वित किया जा सकता है।

प्रो. इच्छाराम द्विवेदी जी ने "**प्रतिक्रिया प्रपत्र**" (फीडबैक फार्म) अनिवार्य रूप से छात्रों द्वारा भरवाने के सन्दर्भ में सुझाव दिया कि "इसे हर छात्र के लिये अनिवार्य किया जाय तथा इसके न भरे जाने की स्थिति में छात्रों को प्रवेश पत्र न देने का निर्देश परीक्षा विभाग को स्थायी रूप में निर्गत किया जाय।" सभी सदस्यों ने इस सुझाव का समर्थन किया तथा माना कि इस प्रकार विद्यार्थियों से मन्तव्य प्राप्त कर अध्ययन एवं अध्यापन की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण योगदान सम्भव हो सकेगा।

शिक्षा एवं क्रीडा से सम्बद्ध स्वस्थ वातावरण निर्मित करने के सन्दर्भ में तथा नैक द्वारा विद्यापीठ के प्रथम प्रत्यायन के बाद दिये गये निर्देशों को ध्यान में रखते हुए विद्यापीठ परिसर में प्रशासन द्वारा क्रीडा विभाग की सहमति से "**बॉस्केट बॉल कोर्ट**" एवं यहाँ के छात्रों, अध्यापकों, कर्मचारियों एवं परिसर निवासियों के लिए "**दो जिम**" का जो निर्माण कराया गया है, इसे सराहनीय कार्य मानते हुए सदस्यों ने सर्वसम्मति से इस कार्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

सभी सदस्यों ने विश्वस्तर पर शिक्षा संस्थानों को भी आतंकवादी गतिविधियों का लक्ष्य बनाने पर चिन्ता एवं दुःख व्यक्त किया तथा इस विषम परिस्थिति में शिक्षा संस्थानों में व्यवस्थित रूप से शैक्षणिक गतिविधियों के संचालन में तथा शैक्षणिक गुणवत्ता के सतत परिवर्धन में सुरक्षा की भावना को महत्त्वपूर्ण माना। इस सन्दर्भ में विद्यापीठ प्रशासन द्वारा पहले से ही उठाए गये सुरक्षा व्यवस्था से सम्बद्ध कदमों का जिनमें–विद्यापीठ परिसर की चार दिवारी को ऊचाँ एवं सुदृढ़ बनाना, सुदृढ़ दो मुख्य द्वारों की व्यवस्था करना, अपेक्षित स्थानों पर गार्डों की नियुक्ति करना, नियमित एवं समयबद्ध रूप से दोनों मुख्य द्वारों से वाहनों एवं सदस्यों के व्यवस्थित रूप में आवागमन को लिखित आदेश (**SLBSRSV/PROCTOR/2014-15/1587 दिनांक 02/12/2014**) द्वारा नियंत्रित करना विद्यापीठ के कुलानुशासक के माध्यम से सुरक्षा की निरीक्षण व्यवस्था को निरंतर बनाए रखना एवं सभी अपेक्षित स्थानों पर पर्याप्त प्रकाश की व्यवस्था करना आदि सम्मलित है, का सदस्यों ने पर्याप्त सराहना की तथा सुरक्षा व्यवस्था के माध्यम से अध्ययन अध्यापन में निर्विघ्न नैरन्तर्य को शैक्षणिक गुणवत्ता के विकास में विद्यापीठ के लिए आवश्यक एवं समुचित माना। कुलानुशासक के हस्ताक्षर से निर्गत उपर्युक्त आदेश का सभी सदस्यों ने अवलोकन किया तथा प्रदत्त सभी स्पष्ट निर्देशों पर अपनी सहमति भी व्यक्त की। सदस्यों ने विद्यापीठ प्रशासन से आग्रह किया कि विद्यापीठ के दोनों मुख्य द्वारों, विश्रान्तिनिलय के रिसेप्शन एवं दोनों तलों पर, छात्रावास के मुख्य द्वार एवं विभिन्न तलों पर, सारस्वत साधना सदन के मुख्य द्वार एवं विभिन्न तलों पर, स्वर्ण जयन्ती भवन के मुख्य द्वार एवं विभिन्न तलों पर,

आवासीय–परिसर के हर प्रखण्ड के समक्ष एवं इसके विभिन्न तलों पर इसी प्रकार अन्य मुख्य भवनों के मुख्य द्वारों पर भी सी.सी.टी.वी कैमरा, सुरक्षा को और सुदृढ़ करने की दृष्टि से यथाशीघ्र लगाया जाए। इस प्रसङ्ग में प्रो. गिरीश नाथ झा ने जे.एन.यू में प्रयोग में लाये जा रहे ऐसे साफ्टवेयर का उल्लेख किया जिससे गेट से आने–जाने वाले वाहनों का नम्बर आदि स्वयं अङ्कित हो जाता है। इस साफ्टवेयर का उपयोग विद्यापीठ में भी करने का सुझाव प्रो. झा ने दिया तथा यह निःशुल्क भारत सरकार द्वारा सुलभ कराया जाता है, यह इन्होंने सूचना दी। प्रो. झा के सुझाव का सभी सदस्यों ने समर्थन किया।

सभी सदस्यों ने विद्यापीठ परिसर में स्थित क्रीडाङ्गण को विवाह आदि शुभ कार्य के लिए जनसामान्य को सुलभ कराने की व्यवस्था पर चिन्ता व्यक्त की तथा इस व्यवस्था को मात्र विश्वविद्यालयीय सदस्यों के पुत्रों एवं पुत्रियों के विवाह मात्र तक आवश्यक निर्देश के साथ सीमित करने का प्रशासन से आग्रह किया।

सदस्यों का यह मानना था कि परिसर छोटा होने के कारण छात्रावास में छात्रों के होने के कारण दिसम्बर एवं मई महीनों में सत्रीय परीक्षा होने के कारण विद्यापीठ परिसर में अध्ययन अध्यापन का वातावरण विवाह हेतु क्रीडाङ्गण देने के कारण प्रदूषित होता है। जिससे हमारे छात्रों को अध्ययन के सन्दर्भ में कठिनाई का सामना करना पड़ता है तथा अन्ततः अध्ययन अध्यापन की गुणवत्ता भी दुष्प्रभावित होती ही है।

नैक के निर्देशानुसार प्रकोष्ठ के सभी सदस्यों ने परीक्षा विभाग के कार्यों को पूर्ण रूप से कम्प्यूटराइज करने का आग्रह किया जिससे छात्रों का लब्धाङ्क पत्र, प्रवेश पत्र एवं अन्य सम्बद्ध प्रपत्र सरलता के साथ बिना विद्यापीठ परिसर में आए, छात्रों द्वारा प्राप्त किया जा सके।

सदस्यों ने सभी शैक्षणिक विभागों में विभागाध्यक्ष स्तर पर कार्यालयीय व्यवस्था के साथ लैपटॉप, कम्प्यूटर एवं प्रिन्टर की व्यवस्था का सर्वसम्मति से अनुमोदन किया। सदस्यों का मानना था कि ऐसी व्यवस्था करने से विभागों का त्वरित गति से कम्प्यूटरीकरण सम्भव हो सकेगा तथा विभागीय सभी गतिविधियों का विवरण कम्प्यूटर के माध्यम से सुरक्षित रखने के साथ–साथ छात्रों को इसे आवश्यकतानुसार ऑनलाइन सुलभ भी कराया जा सकेगा।

छात्र कल्याण संकायाध्यक्ष के कार्यालय में भी पूर्ण रूप से कार्यालयीय सुविधाओं से तथा छात्रों से सम्बद्ध देशस्तरीय कार्यक्रमों की जानकारी सुलभ हो सके एतदर्थ आधुनिक सुविधाओं से युक्त सभी संयन्त्रों, जैसे कम्प्यूटर, प्रिन्टर, इलेक्ट्रानिक बोर्ड, वाई–फाई आदि की व्यवस्था से अन्य विश्वविद्यालयों की तरह अविलम्ब सम्बद्ध करने की सदस्यों ने अनुशंसा की। इस प्रकार विभिन्न विश्वविद्यालयों में गुणवत्ता की दृष्टि से होने वाले

कार्यक्रमों से यह कार्यालय सीधे सम्बद्ध हो सकेगा तथा छात्रों की प्रतिभागिता इन कार्यक्रमों में सहजता से सम्भव हो पायेगी जो छात्रों की गुणवत्ता के वर्धन में उपयोगी सिद्ध होगा, ऐसा सदस्यों का अभिमत था।

कार्यालय के सभी विभागों एवं उपविभागों को भी, कागजीकार्य कम से कम करने की दृष्टि से पूर्णरूप से कम्प्यूटराइज करने का भी आग्रह सदस्यों ने किया, जिससे विद्यापीठ के सभी सदस्य सम्बद्ध सूचनाओं को ऑनलाइन कम्प्यूटर के माध्यम से प्राप्त कर सके तथा कार्यालय में इन सूचनाओं को प्राप्त करने के लिए आवागमन की प्रक्रिया को समाप्त कर, छात्रों एवं अध्यापकों के समय को बचाते हुए, इस समय को अध्ययन अध्यापन में लगाकर गुणवत्ता की अभिवृद्धि की जा सके।

आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ द्वारा विद्यापीठ की गुणवत्ता में सतत परिष्कार की दृष्टि से; अतिरिक्त शास्त्रीय संगोष्ठियों के आयोजन, अन्तः–शास्त्रीय विषयों पर कार्यशालाओं के संयोजन, संस्कृत शिक्षण एवं सम्भाषण से सम्बद्ध शिविरों के आयोजन, संस्कृत नाटकों के मंचन के साथ–साथ छात्रों में अभिनय कला के विकास करने के लिए पाठ्यक्रमों का निर्माण आदि की आवश्यकता भी, गुणवत्ता की त्वरित प्रतिष्ठा के लिये, सभी सदस्यों ने अपरिहार्य माना।

सभी आई.क्यू.ए.सी सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापन के साथ उपवेशन परिपूर्ण हुआ।

प्रो. प्रेम कुमार शर्मा	प्रो. भास्कर मिश्र	प्रो. कमला भारद्वाज 23.12.14
प्रो. एस.एन. रमामणि 23.12.14	प्रो. शुद्धानन्द पाठक 23.12.14	प्रो. इच्छाराम द्विवेदी
प्रो. वीर सागर जैन	प्रो. सुमन कुमार झा 23/12/14	डॉ.ओम् प्रकाश पाण्डेय
डॉ. कान्ता	डॉ. गिरीश नाथ झा	श्री संजीत कुमार झा
		प्रो. पीयूषकान्त दीक्षित 23.12.14